अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) तेउकाय जीवों की उत्कृष्ट भव स्थिति है-
(क) 256 आवलिका (ख) 2 समय
(ग) 3 अहोरात्रि (घ) 49 अहोरात्रि (ग)

(ii) एक हजार सागरोपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट काय स्थिति होती है-
(क) त्रस की (ख) एकेन्द्रिय की
(ग) अवधिज्ञान की (घ) चक्षुदर्शन की (घ)

(iii) सूक्ष्म वनस्पति के पर्याप्त की उत्कृष्ट काय स्थिति है-
(क) 256 आवलिका (ख) अन्तर्मुहूर्त
(ग) सूक्ष्मकाल (घ) पृथक्त्व 100 सागरोपम (ख)

(iv) प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय का उत्कृष्ट अन्तरकाल है-
(क) निगोद काल (ख) सूक्ष्म काल
(ग) वनस्पतिकाल (घ) बादर काल (ग)

(v) समान जाति वाले पुद्गलों के समूह को कहते हैं-
(क) वर्गणा (ख) पुद्गल परावर्तन
(ग) कायस्थिति (घ) शीर्ष प्रहेलिका (क)

(vi) अयोगी केवली एवं सिद्ध होते हैं-
(क) ज्ञान रहित (ख) लेश्या रहित
(ग) चारित्र रहित (घ) शुक्ल ध्यानी (ख)

(vii) प्रतर भेद का उदाहरण है-
(क) सोना (ख) मूंग
(ग) केला (घ) कूप (ग)

(viii) भाषा का संस्थान होता है-
(क) वज्र के आकार का (ख) गोलाकार
(ग) त्रिभुजाकार (घ) उत्करिका (क)

(ix) भाषा की जघन्य स्थिति है-
(क) एक समय की (ख) असंख्यात काल की
(ग) अन्तर्मुहूर्त की (घ) 2 समय की (क)

(x) अधोलोक में सिद्ध होते हैं-
(क) साहरण की अपेक्षा (ख) पण्डक वन से
(ग) वप्रा विजय से (घ) समुद्र से (ग)

(xi) एक कोस में धनुष होते हैं-
(क) 333 (ख) 96
(ग) 2000 (घ) 500 (ग)

(xii) गृहलिंगी सिद्ध होने का उत्कृष्ट अन्तर है-
(क) संख्यात हजार वर्ष (ख) एक वर्ष से कुछ अधिक
(ग) 6 माह (घ) अनन्त काल (क)

(xiii) पुद्गल परावर्तन का थोकड़ा चलता है-
(क) प्रज्ञापना में (ख) भगवती में
(ग) अनुयोग द्वार में (घ) नन्दी सूत्र में (ख)

(xiv) आठ त्रसरेणु इकट्ठे होवे तब होता है-
(क) एक शीतसेणिया (ख) एक बालाग्र
(ग) एक रथरेणु (घ) एक परमाणु (ग)

(xv) आहारक शरीर अधिकतम भव में बनाया जा सकता है-
(क) एक भव में (ख) दो भव में
(ग) 3 भव में (घ) चार भव में (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) संसार परीत का अर्थ प्रथम बार सम्यक्त्व प्राप्ति होना है। (हाँ)
(ii) असंज्ञी की उत्कृष्ट कायस्थिति बादर काल होती है। (नहीं)
(iii) व्यवहार राशि में रहे हुए सभी भव्य जीव मोक्ष में जाते हैं। (हाँ)
(iv) मनयोग, वचनयोग प्रधानता की अपेक्षा से होते हैं। (हाँ)
(v) अप्काय पर्याप्तकों के उत्कृष्ट स्थिति के लगातार आठ भव ही होते हैं। (हाँ)
(vi) नपुंसकवेद की जघन्य कायस्थिति अन्तर्मुहूर्त्त है। (नहीं)
(vii) विशिष्ट शक्ति सम्पन्न पुरुष द्वारा बोले हुए भाषा के पुद्गल लोकान्त पर्यन्त तक जाते हैं। (हाँ)
(viii) सम्बन्ध की अपेक्षा जो सत्य है, वह रूप सत्य है। (नहीं)
(ix) काययोग से भाषा वर्गणा के पुद्गल ग्रहण कर वचनयोग से निकालते हैं। (हाँ)
(x) उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर सिद्ध होते हैं। (नहीं)
(xi) जिन्हें सिद्ध हुए दो समय से लेकर अनन्त समय हो गये हैं, वे परम्पर सिद्ध हैं। (हाँ)
(xii) सर्वस्थानों में सान्निपातिक भाव से सिद्ध होते हैं। (नहीं)
(xiii) आठ जूँ का एक उत्सेध अंगुल होता है। (हाँ)
(xiv) तेजस् पुद्गल परावर्तन से औदारिक पुद्गल परावर्तन का निष्पत्ति काल अनंत गुणा है। (हाँ)
(xv) औदारिक पुद्गल परावर्तन आदि असंख्यात उत्सर्पिणी काल में निष्पन्न होते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i) संसारी अभाषक का जघन्य अंतर	(क) उपमा सत्य	एक समय
(ii) छद्मस्थ अनाहारक की उत्कृष्ट कायस्थिति	(ख) सत्त्व	दो समय
(iii) बादर निगोद की उत्कृष्ट कायस्थिति	(ग) उत्तानमुख	70 कोटाकोटि सागरोपम
(iv) घोड़े का सींग गधे के सींग सरीखा है	(घ) न्युब्जासन	उपमा सत्य
(v) घड़ा झरता है	(च) 70 कोटाकोटि सागरोपम	व्यवहार सत्य
(vi) कमल को ही पंकज कहते हैं	(छ) देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन	सम्मत सत्य
(vii) प्रासुक भोजी	(ज) पृथक्त्व सौ सागरोपम से कुछ अधिक	मड़ाई
(viii) शुभाशुभ कर्मों से संयुक्त	(झ) एक समय	सत्त्व
(ix) सुख-दुःख का भोक्ता	(य) अढाई पुद्गल परावर्तन	वेद
(x) करवट लेकर सोते हुए	(र) व्यवहार सत्य	पार्श्वासन
(xi) सीधे सोते हुए	(ल) मड़ाई	उत्तान मुख
(xii) बैठे-बैठे अधोमुख रहते हुए	(व) दो समय	न्युब्जासन
(xiii) समुच्चय निगोद की उत्कृष्ट कायस्थिति	(क्ष) पार्श्वासन	अढाई पुद्गल परावर्तन
(xiv) त्रसकाय के पर्याप्त की उत्कृष्ट कायस्थिति	(त्र) वेद	पृथक्त्व सौ सागरोपम से कुछ अधिक
(xv) यथाख्यात चारित्र का उत्कृष्ट अन्तर	(ज्ञ) सम्मत सत्य	देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i)	पद्म लेश्या की उत्कृष्ट काय स्थिति मेरी अपेक्षा से होती है।	पाँचवें देवलोक के देव
(ii)	मुझमें उपयोग एक समयवर्ती होता है।	केवलियों में
(iii)	मेरे अभाव में मनःपर्यवज्ञान का भी अभाव हो जाता है।	संयम के
(iv)	मृत्यु भी एक मोड़ है, अतः मृत्यु से भी मैं बदल सकता हूँ।	कषाय
(v)	मेरी उत्कृष्ट कायस्थिति 132 सागरोपम झाझेरी है।	अवधि दर्शन
(vi)	मेरे दूसरे, छठे और सातवें समय में कार्मण काययोग होता है।	(बोनस अंक)केवली समुद्घात
(vii)	भाषा की आदि मुझसे है।	जीव से
(viii)	मैं प्रकट स्पष्ट अर्थ वाली भाषा हूँ।	व्याकृता
(ix)	कोंकण देश में मुझे 'पिच्च' कहते हैं।	पानी को
(x)	मैं भरत-ऐरवत क्षेत्र में प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के शासन में दो पाट तक ही मिलता हूँ।	परिहार विशुद्धि चारित्र
(xi)	निश्चय (वर्तमान) नय की अपेक्षा से अनेक सिद्धों का क्षेत्र मेरे समान है।	मनुष्य क्षेत्र
(xii)	मुझे नोतीर्थ भी कहते हैं।	प्रत्येक बुद्ध
(xiii)	बादर पुद्गल परावर्तनों का विचार मेरे स्वरूप को समझने की अपेक्षा से किया है।	सूक्ष्म पुद्गल परावर्तन
(xiv)	मेरा प्रमाण 48 अंगुल का है।	एक कुक्षि
(xv)	मुझमें 5 संवत्सर का प्रमाण होता है।	एक युग

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) नील लेश्या की उत्कृष्ट कायस्थिति किसकी अपेक्षा से है ?

नील लेश्या की उत्कृष्ट काय स्थिति पाँचवीं नारकी के प्रथम पाथड़े में रहे जीवों की अपेक्षा से है।

(ii) आख्यायिका निसृत असत्य किसे कहते हैं ?

कथाओं में असम्भव बातों का वर्णन आख्यायिका निःसृत असत्य है।

(iii) मड़ाई अणगार को 'जीव' क्यों कहना चाहिए?

वह जीता है, जीवत्व और आयुष्य कर्म का अनुभव करता है इसलिए जीव कहलाता है।

(iv) एक समय में स्त्री, पुरुष और नपुंसक के सिद्ध होने का प्रमाण लिखिए।

एक समय में स्त्री 20, पुरुष 108 और नपुंसक 10 सिद्ध हो सकते हैं। पुरुष मरकर पुरुष बनकर 108 सिद्ध हो सकते हैं।

(v) कर्मभूमि, अकर्मभूमि और पण्डकवन से लगातार कितने समय तक सिद्ध हो सकते हैं?

कर्मभूमि में निरंतर आठ समय तक सिद्ध हो सकते हैं। अकर्मभूमि में चार समय तक सिद्ध हो सकते है तथा पण्डकवन में दो समय तक सिद्ध हो सकते हैं।

(vi) सूक्ष्म भाव पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं ?

रसबंध के हेतुभूत समस्त अध्यवसायों में क्रमपूर्वक मरण को प्राप्त करते हुए जितना काल हो, उसे सूक्ष्म भाव पुद्गल परावर्तन कहते हैं।

(vii) एक पल्योपम को समझाने के लिए दी गई पाँच में से कोई दो उपमाएँ लिखिए।

1. चक्रवर्ती की सेना उस भरे हुए कुए के ऊपर होकर निकल जाय तो जरा सा भी दबे नहीं (एक खण्ड भी मुड़े नहीं)

2. संवर्त्तक नाम का वायु चले तो एक खंड (टुकड़ा) भी उड़े नहीं।

3. पुष्करावर्त मेघ बरसे तो एक खंड भी भींजे नहीं।

4. गंगा सिन्धु नदी का पूर आवे तो एक खंड भी जले नहीं।

5. महा दावानल (वनाग्नि) लगे तो एक खंड भी जले नहीं।

(viii) एक-एक नारकी के नैरयिक ने पाँच स्थावरपने वचन पुद्गल परावर्तन कितने किये ?

अतीता नत्थि, पुरेक्खडा नत्थि

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) संयत की कायस्थिति जघन्य एक समय किस अपेक्षा से है ?

जब कोई मनुष्य संयम अंगीकार करें तो उसे अप्रमत्त संयत नामक सातवाँ गुणस्थान प्राप्त होता है। प्रथम बार संयम ग्रहण करें तो उसे अन्तर्मुहूर्त उस गुणस्थान में ही रहना पड़ता है। उसी भव में दूसरी-तीसरी बार अप्रमत्त संयत गुणस्थान को प्राप्त करे तो आयुष्य पूर्ण होने पर एक समय बाद ही काल कर सकता है।

(ii) बादरकाल को क्षेत्र की अपेक्षा से समझाइए।

अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण क्षेत्र में रहे हुए, आकाश प्रदेशों को प्रति समय निकालने पर जितना काल लगे, उसे बादर काल कहते हैं।

(iii) काय परीत और काय अपरीत का अन्तर लिखिए।

काय परीत का अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का, उत्कृष्ट अनन्तकाल (अढ़ाई पुद्गल परावर्तन) का।

काय अपरीत का अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का, उत्कृष्ट असंख्यात काल (पृथ्वीकाल) का

(iv) सत्य आदि भाषाओं का कारण लिखिए।

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय कर्म के क्षयोपशम, मोहनीय कर्म के उदय और वचन योग से असत्य भाषा और मिश्र भाषा बोलते हैं। ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्म के क्षयोपशम और वचन योग से सत्य और व्यवहार भाषा बोलते हैं। काययोग से भाषा वर्गणा के पुद्गल ग्रहण कर वचन योग से निकालते हैं।

(v) भाषा का द्रव्य और क्षेत्र द्वार लिखिए।

द्रव्य द्वार- जीव भाषा रूप में अनन्त प्रदेशी पुद्गल स्कन्धों को ग्रहण करता है।

क्षेत्र द्वार- क्षेत्र की अपेक्षा जीव असंख्यात आकाश प्रदेशों में अवगाढ़ रहे हुए पुद्गल स्कन्धों को ग्रहण करता है।

(vi) काया के आधार पर सिद्धों की अल्पबहुत्व लिखिए।

वनस्पतिकाय से अनन्तरागत सिद्ध, सबसे थोड़े।

पृथ्वीकाय से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।

अप्काय से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।

त्रसकाय से अनन्तरागत सिद्ध, उनसे संख्यात गुणा।

(vii) आहारक पुद्गल परावर्तन क्यों नहीं होता है ?

आहारक पुद्गल परावर्तन तभी हो सकता है जब कोई मुनिराज अनन्त बार आहारक लब्धि का प्रयोग करें, किन्तु पूरे संसार परिभ्रमण काल में भी चार-बार से अधिक आहारक शरीर नहीं बनने के कारण किसी भी जीव के आहारक पुद्गल परावर्तन नहीं होता है।

(viii) मन पुद्गल परावर्तन से वचन पुद्गल परावर्तन का निष्पत्ति काल अनन्त गुणा होने का क्या कारण है ?

यद्यपि मन की अपेक्षा वचन शीघ्र प्राप्त होता है तथा द्वीन्द्रियादि अवस्था में भी वचन होता है, तथापि मन द्रव्यों की अपेक्षा भाषा द्रव्य अति स्थूल है। इसलिए एक समय में उनका अल्प परिमाण में ही ग्रहण होता है, अतः मन पुद्गल परावर्तन के निष्पत्तिकाल से वचन पुद्गल परावर्तन का निष्पतिकाल अनन्त गुणा है।